120

# माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल

20 पृष्ठीय

वर्ष 2014

परीक्षार्थी द्वारा भरा जावे ↓

| परीक्षा का विषय | विषय कोड | परीक्षा का माध्यम |
|---|---|---|
| Hindi (General) | 4 9 1 | English |

स्टीकर टीप के निशान पर मिलाकर लगायें

5J49028

A-

परीक्षार्थी का रोल नम्बर

| 6 | 7 | 2 | 7 | 0 | 5 | 8 |
|---|---|---|---|---|---|---|
| Six | Seven | Two | Seven | Zero | Five | Eight |

उदाहरणार्थ

| 1 | 1 | 2 | 4 | 3 | 9 | 5 | 6 | 8 |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| एक | एक | दो | चार | तीन | नौ | पांच | छः | आठ |

क — पूरक उत्तर पुस्तिकाओं की संख्या अंकों में X शब्दों में X

ख — परीक्षार्थी का कक्ष क्रमांक 4

ग — परीक्षा का दिनांक 14 03 14

परीक्षा का नाम एवं परीक्षा केन्द्र क्रमांक की मुद्रा

हाई स्कूल सर्टिफिकेट परीक्षा

केन्द्राध्यक्ष
केन्द्र क्र. 672019

पर्यवेक्षक का नाम एवं हस्ताक्षर

Bharti Sharma

केन्द्राध्यक्ष / सहायक केन्द्राध्यक्ष के हस्ताक्षर

96 96

प्रमाणित किया जाता है कि मूल्यांकन के समय पूरक उत्तर पुस्तिकाओं की संख्या उपरोक्तानुसार सही पाई गई होलोग्राफ्ट स्टीकर क्षतिग्रस्त नहीं पाया गया तथा अन्दर के पृष्ठों के अनुरूप मुख्य पृष्ठ पर अंकों की प्रविष्टि एवं अंकों का योग सही है।

निर्धारित मुद्रा नाम पदनाम मोबाईल नंबर परीक्षक क्रमांक एवं पदांकित संस्था के नाम की मुद्रा लगाए।

100 100

छियानवे

| उप मुख्य परीक्षक के हस्ताक्षर एवं निर्धारित मुद्रा | परीक्षक के हस्ताक्षर एवं निर्धारित मुद्रा |
|---|---|
| डॉ. श्रीकांत द्विवेदी<br>पदनाम — प्राध्यापक<br>Mob.No. ...<br>V.No.-D... 01/066<br>शासकीय उत्कृष्ट उ.मा.वि. ...<br>पदनाम - ...व्याख्याता | श्रीमती उषा करनावट<br>पदनाम अध्यापक<br>Mob.No. ...4613<br>V.No. D... 01/060<br>शा उ मा वि कानवन (धार) |

V.No.-... 0023

परीक्षार्थी द्वारा भरा जावे

उप केन्द्राध्यक्ष / केन्द्राध्यक्ष पर्यवेक्षक एवं परीक्षक द्वारा भरा जावे

परीक्षक एवं उपमुख्य परीक्षक द्वारा भरा जावे

केवल परीक्षक द्वारा भरा जावे।

प्रश्न क्रमांक के सम्मुख प्राप्तांकों की प्रविष्टी करें।

| प्रश्न क्रमांक | पृष्ठ क्रमांक | प्राप्तांक (अंकों में) |
|---|---|---|
| 1 | | |
| 2 | | |
| 3 | | |
| 4 | | |
| 5 | | |
| 6 | | |
| 7 | | |
| 8 | | |
| 9 | | |
| 10 | | |
| 11 | | |
| 12 | | |
| 13 | | |
| 14 | | |
| 15 | | |
| 16 | | |
| 17 | | |
| 18 | | |
| 19 | | |
| 20 | | |
| 21 | | |
| 22 | | |
| 23 | | |
| 24 | | |
| 25 | | |

| कुल प्राप्तांक शब्दों में | कुल प्राप्तांक अंकों में |
|---|---|
| | |

SECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATIONMA

अंक

LBOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRAD

प्रश्न क

प्रश्न . 1

(i) ब्रह्मानंद

(ii) पारिवारिक

(iii) रामचरितमानस

(iv) साए में धूप

(v) अवनति

प्रश्न . 2

(i) अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध'

(ii) समानार्थी

(iii) संस्कृति की उपजाऊ भूमि है

(iv) 'तत्पुरुष'

(v) भारतेन्दु युग

B S E

③ [ ] - [ ] =

योग पृष्ठ ... के अंक ... कुल अंक

प्रश्न क्र.

<u>प्रश्न : 3</u>

(i) सत्य

(ii) सत्य

(iii) सत्य

(iv) असत्य

(v) सत्य

<u>प्रश्न . 4</u>

(i) 'जो पीड़ा को दुलरा सकता' – ~~बरखा गीत~~
(ii) कन्याकुमारी और हिमालय – भारत के दो छोर
(iii) शबरी प्रसंग – डॉ. प्रेम भारती
(iv) उपकार मानने वाला – ~~कृतघ्न~~
(v) 'वायुमण्डल है विषैला' – तुम वही दीपक बनोगे

<u>प्रश्न . 5</u>

(i) उज्जयिनी मध्यप्रदेश में है।

(ii) अर्थ के आधार पर वाक्य के 'आठ' प्रकार होते हैं।

(iii) हल चलाने वाले और भेड़ चराने वाले स्वभाव से साधु होते हैं।

प्रश्न क्र

(iv) मीरा के प्रभु गिरधर नागर हैं।

(v) 'जाके प्रिय न राम बैदेही', पंक्ति के रचनाकार गोस्वामी तुलसीदास जी हैं।

उत्तर. 6

इण्डियन प्रेस में काम करते हुए द्विवेदी जी ने "सम्पत्तिशास्त्र" नामक पुस्तक लिखी। महावीर प्रसाद द्विवेदी जी की जो समालोचनाएँ प्रकाशित हुईं थीं, ~~उसके~~ उनकी बदौलत उन्हें इण्डियन प्रेस में सरस्वती पत्रिका का सम्पादन कार्य प्राप्त हुआ था। सरस्वती एक मासिक पत्रिका थी। वह एक मात्र पाठकों की सेविका थी।

उत्तर . 7

मुस्कुराना, हँसना, खिलखिलाकर ठहाके लगाना दीर्घ जीवन के स्वर्णिम सूत्र हैं। हँसने से, प्रसन्न रहने से मनुष्य का स्वास्थ्य ठीक रहता है। खिन्न रहने से कई बीमारियाँ हो जाती हैं जिनका एक मात्र निवारण होता है प्रसन्न रहना। यदि मनुष्य प्रसन्न रहे, हँसता - खिलखिलाता रहे, तो वह अनेक रोगों से बच जाता है।

BOARD OF SECONDARY EDUCATION MADHYA PRADESH BHOPAL

प्रश्न

उत्तर · 8

कहानी की प्रमुख छः तत्व हैं।

1) कथानक
2) संवाद
3) पात्र योजना
4) भाषा शैली
5) देशकाल
6) उद्देश्य

उत्तर · 9

संस्मरण — 'संस्मरण' का अर्थ है 'सम्यक स्मरण', अर्थात संस्मरण में किसी भी व्यक्ति, वस्तु, स्थान का स्मृति के आधार पर वर्णन किया जाता है।

| संस्मरण लेखक | उनकी रचनाएँ |
|---|---|
| 1) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र | प्रताप चरित्र |
| 2) महादेवी वर्मा | पथ के साथी |

6 [ ] + [ ] = [ ]

यो — 6 के अंक — कुल अंक

प्रश्न क्र.

उत्तर 10

| शब्द | | पर्यायवाची |
|---|---|---|
| 1) आकाश | — | गगन, अम्बर |
| 2) अग्नि | — | आग, अनल |

उत्तर 11 "अथवा"

| शब्द | | विलोम |
|---|---|---|
| 1) आस्तिक | — | नास्तिक |
| 2) अनुकूल | — | प्रतिकूल |

उत्तर 12

1) जिसकी तुलना न की जा सके — अतुलनीय
2) जो मीठी वाणी बोलता हो — मृदुभाषी

उत्तर 13 "अथवा"

लोकोक्तियाँ —

1) अपना हाथ जगन्नाथ (स्वयं किया हुआ कार्य सफल होता है)

2) खोदा पहाड़ निकली चुहिया (अधिक परिश्रम लाभ कम)

MADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION

उत्तर - 14 'अथवा'

(i) तुम विद्यालय जाओ।

(ii) क्या मोहन आज दिल्ली जाएगा?

उत्तर : 15 'अथवा'

संधि -
दो या दो से अधिक वर्णों के मेल से जो विकार उत्पन्न होता है, उसे 'संधि' कहते हैं।
संधि के तीन भेद होते हैं :-
1) स्वर संधि
2) व्यंजन संधि
3) विसर्ग संधि

स्वर संधि के उदाहरण -
1) विद्या + आलय = विद्यालय (दीर्घ संधि)
2) अति + अधिक = अत्यधिक (यण संधि)

उत्तर · 16

'कर्मवीर' कविता से हमें यह प्रेरणा मिलती है कि हमें विपरीत से विपरीत परिस्थितियों में भी घबराना नहीं चाहिए और अपने मार्ग पर अग्रसित रहना चाहिए। हमें केवल ख्यालों में उन्नति नहीं करनी चाहिए, बल्कि परिश्रम करके विकास के मार्ग पर चलना चाहिए। हमें यह प्रेरणा मिलती है कि

भाग्य के भरोसे बैठे रहने से कुछ नहीं होगा, हमें निर्माण और नवनिर्माण के कार्यों के बारे में सोचना चाहिए और उसी के लिए कार्य करना चाहिए। साथ ही हमें यह प्रेरणा भी मिलती है कि हमें हर कठिनाई का वीरता से सामना करना चाहिए।

उत्तर · 17 'अथवा'

कवि दुष्यंत कुमार ने अपनी गज़ल में दुखों और विपदाओं के बीच भी आशा और विश्वास रखने पर बल दिया है। उन्हें आशा की किरण ठंडी हवा में, भीगी हुई बाती में, गूँगी पीर में, भोर तक जाने वाली सड़क में, निर्वचन मैदान में लेटी हुई नदी में दिखाई दे रही है। उन्होंने यह कहा है कि चाहे परिस्थितियाँ कितनी ही विडम्बनापूर्ण क्यों न हों, परंतु अभी भी हममें जो शक्ति है, वह कम नहीं है। उन्होंने कहा है कि हमें आशा और विश्वास की ज्योति जला लेनी चाहिए।

उत्तर · 18

शबरी श्री राम और लक्ष्मण को अपनी कुटिया पर आता देख अत्यंत व्याकुल हो गई थी। उसने श्री राम के चरण पकड़ लिए और उन्हें एक टक देखने लगी।

शबरी ने श्री राम और लक्ष्मण को

MADHYA PRADESH BHOPAL BOARD OF SECONDARY EDUCATION

बैठने के लिए मृग छाला का आसन दिया। फिर उसने जिन बेरों को लम्बे समय से प्रभु के लिए इकट्ठा किया था वह उन्हें केले के पत्ते पर रखकर भोजन के रूप में दिए। शबरी के मन में भक्ति की धारा बह रही थी और वह अत्यंत प्रेम से श्री राम को वे बेर खिला रही थी।

श्री राम भी शबरी का किया हुआ सत्कार पाकर संतुष्ट हुए।

उत्तर 19

बंग - भंग आन्दोलन का अरविन्द पर व्यापक प्रभाव पड़ा। उन्होंने पाँच साल तक लगातार सक्रिय राजनीति में भाग लिया। अरविन्द जी ने 'वन्दे मातरम', 'धर्म' और 'कल्याण' नामक पत्रों को ~~संपादन~~ प्रकाशित किया और राष्ट्रीय भावनाओं का प्रचार - प्रसार किया। इतिहास के पन्नों में उनका नाम गर्व से लिखा गया था। वे उस समय के स्वतंत्रता आन्दोलन के महानायकों में से एक थे।

अरविन्द ने आध्यात्मिक तरीकों से राजनीति को चलाना ~~चाह~~ चाहा और सक्रिय राजनीति से हाथ खींच लिया।

EDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPAL

प्रश्न क्र

उत्तर - 20

कश्मीर असीम प्राकृतिक सौन्दर्य का स्थल है। वहाँ के बाग, पर्वत, बर्फ से ढंकी चोटियाँ, तालाब आदि के सौन्दर्य का वर्णन करना लग-भग असम्भव है। किसी ने तो यहाँ तक कहा है कि धरती पर अगर कहीं स्वर्ग है, तो वह यहीं है। कहते हैं कि जहाँ पर आज घाटी है, पहले वहाँ सतीसर झील थी जो पहाड़ों की बर्फ पिघलने से बनी थी। महाभारत काल से कि हि कश्मीर के शासकों की गाथाएँ मिलती हैं। सम्राट ललितादित्य का नाम इनमें से उल्लेखनीय है। वे स्वयं साहित्यकार और कला प्रेमी थे। वहाँ का प्राकृतिक सौन्दर्य प्रत्येक भारतीय को लुभाता है।

उत्तर - 21 'अथवा'

तनाव, खिन्नता आदि से मनुष्य इतना घिर चुका है कि इनके अलावा कुछ बचा हि नहीं है। तनाव से अनेक प्रकार के रोग उत्पन्न होते हैं, जैसे - सिर दर्द, उच्च रक्तचाप, हृदय रोग, पेप्टिक अल्सर, ऐसिडिटी आदि।

इन सभी रोगों की वजह से मन अशांत भी रहता है। इन सभी रोगों के अलावा मनुष्य का सामाजिक जीवन भी अस्त-व्यस्त हो जाता है। तनाव की वजह से खिन्नता बनी रहती है। मनुष्य चिड़चिड़ा होने लगता है। ऐसे में कोई

B
S
E

भी ऐसे लोगों के पास बैठना, बात करना पसंद नहीं करता। जिसकी वजह से वे अकेले हो जाते है और जीवन दुष्कर बन जाता है।

उत्तर. 22

"पायो नाम चारु चिंतामनि" से तुलसीदास जी का आशय है कि उन्होंने राम नाम रुपी चिंतामणी को प्राप्त कर लिया है और अब वे उसे अपने हृदय मे बसाएँगे और राम नाम रुपी कन्चन को अपने हृदय की कसौटी पर कसेंगे। वे इस चिंतामणी के जरिए भव सागर को पार कर लेंगे।

तुलसीदास जी ने राम की भक्ति को ही सर्वश्रेष्ठ कहा है और बताया है कि वे ही परमहित को प्राप्त करते है जो ईश्वर के लिए अपने सगे सम्बन्धियों को भी त्यागने के लिए तैयार होते है। उन्होंने कहा है कि जो भी राम और सीता के विरोधी हैं वे करोड़ों बैरियों के समान है। उन्होंने मनुष्य का उद्धार ईश्वर की एकनिष्ठ भक्ति मे ही बताया है। तुलसीदास जी ने कई उदाहरणों के माध्यम से यह बताया है कि ईश्वर के लिए हमें सभी राम-सीता के विरोधियों को त्याग देना चाहिए, जैसे प्रहलाद ने अपने पिता को, भरत ने अपनी माता को, विभीषण ने अपने भाई को, ब्रज की गोपियों ने अपने पति सम्बन्धों को त्यागकर ईश्वर भक्ति में सुख को पाया था।

MADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION

उत्तर. 23

'सूखी डाली' एकांकी पारिवारिक पृष्ठभूमि पर लिखी गई है। इसमें पारिवारिक अंतर्द्वंद्व को बड़े ही मार्मिकता से चित्रित किया है। इस एकांकी में यह बताया गया है कि कुटुम्ब एक महान वट वृक्ष के समान होता है और सभी सदस्य उसकी एक-एक डालियाँ होती हैं। जिस प्रकार वट वृक्ष की छाया शीतल और सुखद होती है, उसी प्रकार संयुक्त परिवार में मुखिया का संरक्षण सुख और शीतलता प्रदान करता है। यदि मुखिया का प्रभुत्व समाप्त हो जाता है, तो परिवार टूटने लगता है, उसी प्रकार जिस प्रकार वृक्ष से टूटकर डाली का अलग हो जाना।

इस एकांकी में यह बताया गया है कि जिस प्रकार वृक्ष से टूटकर कोई डाली धरती में आत्मसात हो जाती है, उसी प्रकार किसी सदस्य का परिवार से अलग हो जाना अत्यंत दुखद है।

इसलिए इस बात पर ज़ोर डाला गया है कि यदि मुखिया का प्रभुत्व समाप्त हो जाता है, तो परिवार बिखरने लगता है।

(13)

भाग पूर्व पृष्ठ   3 के अक   कुल अक

MADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION

प्रश्न क्र

उत्तर 24

अवतरण - "पायो जी - - - - - सवायो।"

संदर्भ - प्रस्तुत पद्य पंक्तियाँ हमारी पाठ्यपुस्तक वासन्ती की कविता 'मीरा के पद' से ली गई हैं। इसकी रचयिता मीराबाई हैं।

प्रसंग - प्रस्तुत पंक्तियों में मीराबाई ने ईश्वर की भक्ति को प्राप्त करने और उसके गुणों का वर्णन किया है।

व्याख्या - मीराबाई कहती हैं कि मैंने राम रतन धन को प्राप्त कर लिया है और यह सतगुरु की कृपा से सम्भव हो पाया है। उसने ईश्वर अर्थात श्री कृष्ण की भक्ति को अमोलक बताया है और कहा है कि मैंने जन्मों की पूँजी पा ली है और मैं धन्य हो गई हूँ। जग में सब कुछ खो जाता है, पर यह खोती नहीं, खर्च नहीं होती, कोई चोर इसे चुरा नहीं सकता और यह प्रतिदिन बढ़ती जाती है।

विशेष - प्रस्तुत पंक्तियों में ईश्वर की भक्ति के गुणों को प्रदर्शित किया गया है। इसमें शान्त रस है।

B S E

उत्तर · 25

(i) शीर्षक - 'भारत की विशेषताएँ'।

(ii) मुख्य रूप से भारत में एकता विद्यमान है। यहाँ विभिन्न जातियाँ, धर्म, बोलियाँ, पहनावा आदि है, किन्तु सभी भारतवासी एक हैं।

(iii) भारत की मुख्य विशेषता 'अनेकता में एकता' है।

(iv) अनेकता का विलोम 'एकता' है।
मजबूत का विलोम 'कमजोर' है।

उत्तर · 26

(i) शीर्षक - 'हरियाली'।

(ii) कवि ने हरियाली को मखमल के समान कोमल बताया है।

(iii) सूर्य की किरणों की चमक चाँदी के समान है।

(iv) खेतों में दूर तक हरियाली फैली है जो मखमल की तरह कोमल है। सूर्य की किरणें उसमें लिपट कर चाँदी की समान उजली प्रतीत हो रही हैं।

15

पूर्व पृ. + पृ. के अंक = कुल अंक

MADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION

उत्तर : 27

राम विला,
होशंगाबाद

14 मार्च 2014

प्रिय मित्र,

ईश्वर से कामना करती हूँ कि तुम कुशलता से हो। मैंने तुम्हें अपनी एक रोमांचक यात्रा के बारे में बताने के लिए यह पत्र लिखा है। पिछले दिनों मैं अपने परिवार के साथ कश्मीर भ्रमण के लिए गई थी। वहाँ का प्राकृतिक सौन्दर्य अत्यंत ही सुखद है।

कश्मीर में अत्यंत सुंदर पर्वत, घाटियाँ, तालाब, बर्फ से ढकी चोटियाँ, व हरियाली है जो मन को प्रसन्न कर देता है। वहाँ पर बहुत ठण्ड थी और पहाड़ों की चोटियाँ बर्फ से ढँकी थी। पहाड़ों की चढ़ाई करना बहुत ही मनोरंजक और रोमांचक था।

श्री शंकराचार्य पहाड़ी भी एक बहुत ऊँचा स्थान है जहाँ श्री शंकराचार्य जी की मूर्ति और शिवजी की मूर्ति है।

डल झील कश्मीर की एक मुख्य झील है। वहाँ पर्वतों का दृश्य, लहकती हरियाली मन को प्रसन्न कर देती है। मेरी सलाह है कि तुम्हें एक ~~बार~~ बार कश्मीर भ्रमण पर अवश्य जाना चाहिए।

काका जी - काकी को मेरा नमस्कार।

तुम्हारी सहेली,
xyz

B
S
E

16

पृष्ठ + पूर्ण = अंक

प्रश्न क्र.

प्रश्न 28

(अ) प्रदूषण की समस्या

"साँस लेना भी अब मुश्किल हो गया है।
वातावरण इतना प्रदूषित हो गया है॥"

रूपरेखा

① प्रस्तावना
② प्रदूषण के प्रकार
(i) जल प्रदूषण
(ii) वायु प्रदूषण
(iii) ध्वनि प्रदूषण
(iv) मृदा प्रदूषण
③ प्रदूषण से समस्याएँ
④ समाधान
⑤ उपसंहार

B S E

1) प्रस्तावना - प्रकृति ने हमें असीम सुविधाएँ प्रदान की हैं - वृक्ष, जल, वायु इत्यादि, जिनसे हमारा जीवन सुखद और आसान बनता है। किंतु मनुष्य के घिनौने कृत्यों की वजह से यह प्रकृति संकट में है। आज सर्वत्र गंदगी व्याप्त हो गई जिससे 'प्रदूषण' की समस्या उत्पन्न हो गई है। सभी प्रदूषण से और मानव जीवन खतरे में पड़ा।

प्राप्त पूर्ण पृष्ठ ... अंक
MADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION
मध्यप्रदेश

रही है।

2) प्रदूषण के प्रकार -

प्रदूषण तब फैलता है जब प्राकृतिक वस्तुओं का बैलेंस बिगड़ने लगता है। प्रदूषण मुख्यतः चार प्रकार का होता है :-

(i) जल प्रदूषण -

जल में जब हानिकारक रसायन या अन्य पदार्थ मिलने लगते हैं, तो जल प्रदूषित होने लगता है। यह फैक्ट्रियों के कचरे से, नालों की गंदगी इत्यादि से फैला है।

(ii) वायु प्रदूषण -

वायु कई प्रकार की गैसों का मिश्रण है। इन गैसों की मात्रा कम-ज्यादा हो जाने से वायु प्रदूषण होता है। यह कार्बन मोनोऑक्साईड, कार्बन डाईऑक्साईड आदि गैसों से होता है।

(iii) ध्वनि प्रदूषण -

जब विविध प्रकार की ध्वनियाँ वातावरण में अत्यधिक परेशानियों का कारण बन जाती हैं, तो ध्वनि प्रदूषण होने लगता है। यह ध्वनि विस्तारक यंत्रों का जोर से उपयोग करने पर होता है।

(iv) मृदा प्रदूषण -

मिट्टी में दूषित जल अथवा रसायनों के मिल जाने से मृदा प्रदूषण होता है।

3) प्रदूषण से समस्याएं -

प्रदूषण हमारा आज का सबसे बड़ा शत्रु बन गया है। दूषित जल के सेवन से पीलिया, उल्टी-दस्त, कोलरा आदि बीमारियाँ फैल रही हैं। दूषित वायु वृक्षों, पेड़-पौधों, के लिए समस्या है। यह अस्थमा, कैन्सर आदि जानलेवा रोगों का कारण है। अत्यधिक ध्वनि प्रदूषण से वातावरण में तनाव हो रहा है। मानसिक रोग, सिर-दर्द, श्रवण रोग आदि समस्याएँ उत्पन्न हो रही हैं। दूषित मृदा में उगने वाले पेड़-पौधे भी दूषित हैं। मृदा की उर्वरक क्षमता भी कम हो रही है। अधिक रासायनिक खादों का उपयोग फल-सब्जियों को भी दूषित कर रहा है। इस तरह केवल मनुष्य ही नहीं, पशु-पक्षी भी प्रदूषण से त्रसित हैं; दूषित जल, दूषित वायु उन्हें त्रस्त कर रही है।

4) समाधान

इस जघन्य समस्या का निदान अति आवश्यक है। सबसे बड़ा समाधान वृक्षारोपण है। वृक्षों से अनेकों प्रदूषणों को रोका व उनके दुष्प्रभावों को कम किया जा सकता है। प्लास्टिक, फाइबर की वस्तुओं का प्रचलन कम किया जाना चाहिए। इनके पुनः उपयोग के साधन निर्मित किए जाने चाहिए। वृक्षों का संरक्षण बहुत महत्वपूर्ण है। रसायनिक खादों के बजाय, प्राकृतिक खादों का उपयोग किया जाना चाहिए।

सरकार को ध्वनि विस्तारक यंत्रों पर रोक लगाने हेतु उचित कदम उठाए जाने चाहिए।

5) उपसंहार –

हमें इस धरती को बचाना है तो सबसे बड़े शत्रु, 'प्रदूषण' को भगाना होगा। हमें जन मानस को जगाना होगा और अति शीघ्र उचित प्रयासों द्वारा इसे नष्ट करना होगा। इसके लिए सबसे उपयुक्त साधन है वृक्षारोपण। हमें प्रकृति को पुनः हरा-भरा करना होगा। प्रदूषण से बचने के लिए मानवता को जगाना होगा।

"प्रकृति का ऋण हर मानव को चुकाना होगा।
जल, वायु प्रदूषण भूत भगाना होगा॥"

(ब) वृक्षारोपण

"जन-जन से यह कहना है।
वृक्ष धरा का गहना है॥"

रूपरेखा

1) प्रस्तावना
2) वृक्षों का महत्व
3) वृक्षों की उपासना का प्रचलन
4) वृक्षों से लाभ
5) वन महोत्सव
6) उपसंहार